विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति की गृह पत्रिका

अंक - 7 अप्रैल-जून 2008

सम्पादकीय

नवसंवत्सर के शुभारंभ पर सभी का हार्दिक अभिनन्दन। पुराना संवत्सर बीतने पर पुराने विषाद -शोक भूल जाने और नए सिरे से ऊर्जा और अन्य स्रोतों का संग्रह कर अपने-अपने कर्मक्षेत्र में आगे बढ़ने में ही सबका हित है।

ग्रीष्म ऋतु आरम्भ हो चुकी है और इसके साथ ही गरमी का प्रकोप भी । महानगरों में रहने और काम करने वाले लोग एयर कंडीशनरों, वाटर कूलरों और रेफ्रिजरेटरों आदि के उपयोग से गरमी का मुकाबला कर लेते हैं । किन्तु देश के शेष भागों के लिए यह कठिन चुनौती का दौर होता है, विभिन्न कारणों से बिजली की खपत बढ़ जाती है. उत्पादन घट जाता है, विद्युत उत्पादन केन्द्रों को जल की आपूर्ति करने वाले जलाशय / सरोवर सूखने लगते हैं, प्यासी धरती की प्यास बुझाने के लिए नलकूप चलाए जाते हैं, उनके लिए भी बिजली लगती है । कहने का अर्थ है कि जैसे-जैसे समस्या (गरमी)से लड़ने का प्रयास किया जाता है वैसे-वैसे ये समस्याएँ भी बढ़ती जाती है । इनका समाधान पारम्परिक या लगे-बंधे तरीके से नहीं बल्कि लीक से हटकर अपने नए आचरण से किया जा सकता है । सबसे पहले बिजली के खर्च में किफायत बरतें । अनावश्यक रूप से पंखे, बल्ब / ट्यूब ए.सी. मशीन, टी.वी. न चलाएँ । यह आचरण घर में बिजली का बिल घटाएगा और दफ्तर में भी सरकारी खर्च में कमी आएगी । इतना ही नहीं, विद्युत की आपूर्ति की आवश्यकता भी कम होगी और इस प्रकार जो बचत होगी वह कृषि क्षेत्र, लोड शैडिंग वाले क्षेत्रों, उद्योगों को मिल सकेगी । उत्पादन केन्द्रों पर और भार प्रेषण केन्द्रों पर दबाव में कमी आएगी ।

गरमियों में पानी का उपयोग बढ़ जाता है । पानी को दूर-दराज और ऊँची-ऊँची इमारतों तक पहुँचाने के लिए बिजली से चलने वाले वाटर-पम्प इस्तेमाल किए जाते हैं । जितना अधिक पानी का खर्च, उतनी अधिक बिजली का खर्च । बरसात का मौसम अच्छी तरह शुरू होने से पहले पानी का किफायती उपयोग बिजली और पानी की बचत करवाएगा और मानसून से पहले जलाभाव के संकट को दूर रखेगा । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल के प्राकृतिक संसाधन भी तेजी से सिकुड़ते जा रहे हैं ।

अप्रैल माह की शुरूआत के साथ ही नया वित्तीय वर्ष और राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित नया वर्ष भी आरम्भ हो जाता है । इसके साथ राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित नया वार्षिक कार्यक्रम भी आरम्भ हो गया है । नीति अनुपालन की दिशा में जो लक्ष्य पिछले वर्ष दिए गए थे, उनमे न्यूनाधिक मात्रा में वृद्धि ही हुई है। कार्यालय में राजभाषा नीति के विभिन्न प्रावधानों का यथासंभव अनुपालन किया जाता है फिर भी हमारा लक्ष्य निरंतर प्रगति की ओर बढ़ना होना चाहिए । इस दिशा में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु हमें यथाशक्ति प्रयास करना है । पिछले वर्ष हमारे कार्यालय में लागू चार प्रोत्साहन योजनाओं के समान अगले वर्ष भी ये चारों प्रोत्साहन योजनाएँ लागू रहेंगी । अपेक्षा है कि सभी **अधिकारी** एवं **कर्मचारी** इन प्रोत्साहन योजनाओं में भाग लें । इसके अलावा विद्युत दर्पण में प्रकाशित तकनीकी लेखों के संबंध में भी एक वार्षिक प्रतियोगिता की घोषणा शीघ्र की जाएगी । राजभाषा नीति के अनुपालन में प्रोत्साहन योजनाएँ उत्प्रेरक का काम करती है। राजभाषा नीति का अनुपालन हमारा संविधानिक दायित्व है । आइए हम सब नवसम्वत्सर के शुभारम्भ पर अपने कर्तव्यों के यथाशक्ति निर्वाह का संकल्प लें ।

आपका,

(प्रवीणभाई पटेल)
सदस्य सचिव

तारे जमीं पर

- चि. रोहित टेन्पे, सुपुत्र श्री एस.जी. टेन्पे, अधीक्षण अभियंता (वाणि.) ने महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंस से वर्ष 2007-08 में ''एम.बी.बी.एस.'' परीक्षा उत्तीर्ण की ।
- कुमारी दीपाली देशमुख, सुपुत्री श्रीमती आरती देशमुख, अ.श्रे.लि., ने महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंस से वर्ष 2007-08 में ''बी. एच. एम.एस.'' परीक्षा उत्तीर्ण की ।

मेडीकल क्षेत्र के आसमां पर उदयमान इन दो सितारों को उनकी इस स्वर्णिम उपलब्धि पर पक्षेविसमिति परिवार की ओर से हार्दिक अभिनंदन!

समाचार दर्पण

- श्री रविन्द्रनाथ पांढरे, कार्यपालक अभियंता, पक्षेविसमिति, मुंबई अधिवर्षिता की आयु प्राप्ति पर दिनांक 31 मार्च 2008 को सरकारी सेवा से सेवा निवृत्त हुए । पक्षेविसमिति परिवार उनके स्वस्थ एवं आनन्दमयी सेवा निवृत्त जीवन की कामना करता है ।
- श्री अनिल थॉमस, सहायक निदेशक श्रे-I ने दिनांक 26 फरवरी 2008 को पक्षेविसमिति, मुंबई में कार्यभार ग्रहण किया । पक्षेविसमिति परिवार में नये सदस्य के रूप में हार्दिक स्वागत!

हार्दिक बधाई

- श्री मोरेश्वर धकाते,कार्यपालक अभियंता ने इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी की ''एडवांस सर्टिफिकेट इन पावर डिस्ट्रिब्यूशन मैनेजमेंट'' परीक्षा 71% अंकों से उत्तीर्ण की । हार्दिक बधाई !

* * * *

(पिछले अंक से जारी)

वैश्विक ऊष्मता (ग्लोबल वार्मिंग)

सु.द.टाकसांडे,
अधी.अभि.(र.एवं से.)

(1) बेहतर कारें और स्मार्ट टैक्नोलॉजी:- दूसरा सबसे अधिक वायु प्रदूषक अवयव पैट्रोलियम-उत्पादों से चलने वाली कारों के ऐग्ज़ास्ट से निकलने वाली गैसें हैं । नई टैक्नोलॉजी की बदौलत अब ऐसी कारें बनने लगी हैं जिनमें ईंधन कम जलता है और पहले जितने ईंधन में दोगुना दूरी की यात्रा की जाने लगी है । इसके साथ ही इन्टरनेट की नई टैक्नोलॉजी ने अब बैंक संबंधी लेन-देन तथा हवाई जहाज, रेल गाड़ी आदि के टिकटों की बुकिंग घर बैठे संभव कर दी है । इसी प्रकार अनेक अन्य लेन-देन भी अब एक ही स्थान से इन्टरनैट के जरिए करना संभव हो गया है । इससे इन कामों के लिए सड़क पर निकलना और ईंधन जलाना कम हुआ है और इसे और अधिक कम करने की आवश्यकता है ।

(2) जैव ईंधन और दोबारा उपयोग किए जाने वाला ईंधन:- आज सौर ऊर्जा, पवन शक्ति इत्यादि, ऊर्जा के गैर-परम्परागत स्रोतों का उपयोग करने की आवश्यकता है । पेड़-पौधों के अंशों (जीवाश्मों) से निर्मित जैव-ईंधन का स्वच्छ (नान-ल्यूमिनस) जलना, गैसोलिन (पैट्रोल आदि) के विकल्प के रूप में उत्साहवर्धक उम्मीदें जगा रहा है । जैविक कूड़े-कचरे से इथनोल या ऊर्जा-फसल के निर्माण की नई विधियां काफी व्यापक पैमाने पर तेल का मुकाबला कर सकती हैं ।

(3) कार्बन को पुन: जमीन में पहुँचाओ:- यह एक तथ्य है कि हमारे विद्युत उत्पादन का 50% कोयले के जलने पर आधारित है । सभी जीवाश्म (फॉसिल) ईंधनों में से कोयले में कार्बन की सघनता सबसे ज्यादा है । ऊर्जा के गैर-परम्परागत स्रोत हमारी ऊर्जा मांग को पूरा नहीं कर पाएंगे । साथ ही, देश की ऊर्जा-मांग में कमी लाने की भी तो कोई सीमा है । इसलिए, विद्युत उत्पादन केन्द्रों से उत्पन्न होने वाली कार्बन डाईआक्साइड का कुछ तो भी करना ही होगा । नई टैक्नोलॉजी का उपयोग कर हम कोयले को स्वच्छ ज्वलनशील गैस में बदल सकते हैं और कार्बन डाईआक्साइड को नियंत्रित कर भूमि की सतह के नीचे गहराई में उसे निपटा सकते हैं और इस प्रकार नाटकीय ढंग से, इस सबसे गंदे ईंधन से होने वाले वायु प्रदूषण में, कमी ला सकते हैं ।

निष्कर्ष:- ऊपर बताए गए सभी निवारक उपाय हमारे नियंत्रण और क्षमता में हैं । जहाँ चाह है, वहाँ राह है । तुरंत उपयुक्त कदम उठाने के अलावा हमारे पास कोई उपाय नहीं है । हमारे पास एक ही ब्रह्म वाक्य है, ''हाँ, यह सम्भव है ।''

* * * *

आसमां तक पहुँच नहीं है,
पर धरती तो छू सकते हैं
गर मिट्टी का तिलक लगा लें,
आसमां खुद झुक जायेगा ।

* * * *

काव्य कुंज

आदमी

कुत्ता बहुत स्वामीभक्त कहलाता है,
उसकी स्वामीभक्ति में और भी निखार आता है,
जब वह दुम हिलाते-हिलाते स्वामित्व में दुम हिलाता है ।
स्वामी के चरणों में लेटकर, उसके पैर चाटता है ।

एक दूसरे जानवर की बात करें जो बहुत जरूरी प्राणी है
माल ढ़ोता है, निरंतर फेरे लगता है
जब अपनी अक्ल लगाता है तो डंडे खाता है ।
कम खाता है, फिर भी स्वामित्व निभाता है ।

एक और जीव है, जिससे सब डरते हैं
हर साल केंचुली उतारता है, सबको आश्चर्यित करता है
सब आदर करते हैं, दूध पिलाते हैं, आशीर्वाद का आश्वासन पाते हैं
वह शान से सब स्वीकारता है, पर समय पाते ही डस जाता है ।

हमने सोचा, क्या ऐसा भी कोई जीव है
जो सबका सम्मिश्रण है, सबका पर्याय है
मंथन किया, जतन किया, अतीत से वर्तमान तक ढूंढा।
सोचा और तो कोई ऐसा नहीं
आदमी को छोड़कर और तो कोई दूसरा नहीं ।

दयानन्द सिंह
कार्यपालक अभियंता

समय का कमाल

रात दिन कभी रूकते नहीं,
नदी का बहाव थकता नहीं,
जिंदगी के बाद ही मिलती है मुक्ति,
जिंदगी की दौड़ किसी को नहीं छोड़ती,
यह समय का कमाल नहीं तो और क्या है ।
जो बीत चुका वह बदलता नहीं,
सही क्षण निश्चय करने वाला ही सही,
समय का सही उपयोग जिसने किया,
हर पल सफल उसी का हुआ,
यह समय का कमाल नहीं तो और क्या है ।

सृजन शैल
सुपुत्र तरुप्रभा शैल, हि.अनु.

तन्हाई

तन्हाई के आलम में किससे करें बातें
आँखों की पलकों में, सुनहरे सपने सजाते
कभी अटहास ठिठोली, कभी तन से लगाते
ख्वाबों में डूबकर, कभी रोते कभी हँसाते
ख्वाब में आकर गुदगुदाती वो मीठी यादें
और कितनी देरी है, अब जल्दी मिला दे
मेरे मालिक एहसान कर, उसकी तस्वीर दिखादे
कराहते दिल की तड़प, तेज बहुत धड़के
शुभ सगुन है, बार-बार आँखें फड़के
कहूँ दिल के अरमान, कटती नहीं रातें ।
तनहाई के आलम में किससे करें बातें

खीरू राम राय,
सहायक निदेशक श्रे.I